eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

स्वतंत्रता बनाम समानता

[1]डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ज0ला0ने0मेमो. परा0 महाविद्यालय, बाराबंकी

Received: 01 Jan 2018, Accepted: 15 Jan 2018 ; Published on line: 31 Jan 2018

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र वर्तमान में बदलती हुई विश्व व्यवस्था को केंद्र में रखकर लिखा गया है। राजनीति विज्ञान के दो प्रमुख सिद्धांत स्वतंत्रता व समानता के प्रभावों को रेखांकित करता है। किस तरह ये दो सिद्धांत दो विचारधाराओं में बद ले और किस तरह इन्होने सम्पूर्ण विश्व को दो ध्रुवों में बाँट दिया। इसमें वर्तमान की वैश्विक परिस्थितियों का अध्ययन करके इस समस्या के निराकरण तक पहुँचने का प्रयास किया गया है और यह शोध आज के समय में और प्रासंगिक हो जाता है जब पुनः विश्व में अशांति का माहौल देखते है। जिनको परस्पर विरोधी बना दिया गया है कैसे उनके समंवय में विश्व का कल्याण निहित है इसी बात का अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्य है।

शब्द संक्षेप– वर्तमान परिदृश्य, बदलती हुई विश्वव्यवस्था, राजनैतिक सिद्धांत, स्वतंत्रता व समानता।

Introduction

विश्व की बदलती हुई अर्थव्यवस्था ने सम्पूर्ण विश्व की राजनीतिक , सामाजिक व सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन कर दिया है। उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण ने विश्व को एक गांव बना दिया है। भौगोलिक दूरी तो उतनी ही है लेकिन संचार के नवीन साधनो व विज्ञान व तकनीकी के नवीन आविष्कारों ने इस दूरी को नगण्य बना दिया है। आज के वैश्विक परिवेश को देखकर ऐसा ही प्रतीत होता है। कोरोना महामारी ने जिस तरह वैश्विक महामारी का रूप धारण किया उससे सभी लोग अवगत है। राजनीतिक परिस्थियों को अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था को राजनीति सदैव प्रभावित करती रही है। कुछ राजनीतिक विचारकों ने तो सम्पूर्ण राजनीतिक सिद्धान्तों का आधार ही अर्थव्यवस्था को बना लिया है। कार्ल मार्क्स इसके सबसे सटीक उदारहण है।उनकी विचारधारा ने दुनिया को साम्यवादी राजनीतिक व्यवस्था दी और वही पश्चिम के देशों ने पूंजीवादी राजनीतिक व्यवस्था को अपनाया। दोनों के केंद्र में अर्थव्यवस्था ही है। एक विचारधारा संसाधनों पर निजी स्वामित्व को प्रोत्साहित करती है और व्यक्ति के जीवन में राज्य के कम से कम हस्तक्षेप का समर्थन करती है, वही

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

दूसरी विचारधारा संसाधनो के समान वितरण के लिए उसे राज्य के हाथों में सौंपती है और राज्य के कार्यो को इतना बढ़ा देती है। कि व्यक्ति के जीवन में उसका अधिकतम हस्तक्षेप होने लगता है।एक विचारधारा स्वतंत्रता पर बल देती है तो दूसरी समानता पर। वैश्विक संघर्षों का यदि अध्ययन किया जाये तो उनकें मूल में इन्ही दो विचारधाराओं का संघर्ष ही दिखाई देता है। अपने प्रभाव को विश्व में फैलाकर सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व करने की भावना ही संघर्षों को जन्म देती है।

स्वतंत्रता :– सामान्य शब्दों में यदि कहे तो **प्रतिबंधों का अभाव** ही **स्वतंत्रता** होती है। अब यह चाहे राजनीतिक क्षेत्र में हो या आर्थिक क्षेत्र में। जे. एस. मिल ने अपनी पुस्तक "ऑन लिबर्टी" में स्वतंत्रता का घोर समर्थन किया और जॉन लॉक ने प्राकृतिक आधिकारों में स्वतंत्रता का अधिकार भी शामिल किया है। यदि देखा जाये तो स्वतंत्रता मानव का ही नही अपितु प्रत्येक जीवधारी का मूल स्वभाव है कोई पक्षी भी कभी पिंजरे में कैद नही रहना चाहता है। वह आसमान की असीम ऊचाईयों में उड़ना चाहता है। तो फिर मानव तो एक विवेकशील प्राणी है जिसके पास बुद्धि–विवेक है जिनके माध्यम से वह अपना विकास करता है। किंतु बिना स्वतंत्रता के किसी व्यक्ति का समुचित विकास सम्भव ही नही है। और इसी स्वतंत्रता को बढ़ावा देने का काम उदारवाद करता है। वह राजनीतिक क्षेत्र में बहुदलीय लोकतांत्रिक प्रणाली का समर्थन करता है। प्रत्येक व्यक्ति को चुनाव लड़ने व मत देने का अधिकार देता है। आर्थिक क्षेत्र में मुक्त बाजार का निर्माण करता है। उत्पादन व वितरण का कार्य निजी हाथों में सौपता है जिससे राज्य के कार्यभार में कमी आये और व्यक्ति स्वतन्त्र रूप से अपना आर्थिक व राजनीतिक विकास कर सके।

किंतु यही स्वतंत्रता शक्तिशाली को और अधिक शक्तिशाली व कमजोर को और अधिक कमजोर बनाती है। क्योंकि जो शक्तिशाली होता है वह अपनी शक्तियों के प्रयोग से परिस्थितियों को अपने अनुरूप बना लेता है। और फिर चाहे वो बाजार हो या फिर शासन व्यवस्था। अपने हितों की रक्षा के लिये नीति निर्माण करना और अपने लाभ में वृद्धि करना उसके लिये आसान काम हो जाता है और फिर समाज में शुरु होती है असामनाता की खाई। सिर्फ एक देश में नही वरन सम्पूर्ण विश्व में यह असामनता की खाई हमें दिखाई देती है। वर्ल्ड बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोश कहने को तो यह विश्व की आर्थिक स्थिति का समंवय बनाने वाली संस्थाएँ है किंतु यदि इनके संगठन व कार्य पद्धति का अध्य्यन करे तो देखते है कि ये सिर्फ कुछ विकसित देशों के हितों को पूर्ण करने वाली संस्थाएँ प्रतीत होती है। जिसका जितना अधिक अनुदान उसकी उतनी ही अधिक प्रशासनिक शक्ति। विकासशील

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

देश कर्ज के बोझ के तले ही दबे रहते है। और विश्व व्यवस्था में विकसित देशों पर आर्थिक रूप से निर्भर रहने के कारण स्वतंत्र होने के बाद भी आर्थिक उपनिवेश बनकर रह गये है। दूसरे देश के निर्णय उन पर बाध्यकारी हो जाते है। आर्थिक निर्भरता राजनीतिक निर्भरता में बदल जाती है।

समानता :– अरस्तु ने अपने क्रांति के सिद्धांत में कहा कि **किसी राज्य में असामानता वहाँ क्रांति का कारण बन सकती है।** और यह बात बिल्कुल सही प्रतीत होती है। इस बात को समझने के लिये किसी देश का अध्ययन करने की आवश्यकता नही है ,आप सिर्फ एक परिवार का अध्ययन करके इस बात को अच्छे से समझ सकते है। पुनर्जागरण के बाद जव विज्ञान का विकास हुआ तब जाकर ये विचारधारा उत्पन्न हुई। चर्च, राजा और नागरिक तीनों की शक्तियों में असीम असमानता था। पहले राजा और चर्च के मध्य संघर्ष हुआ जिसमें राजा की विजय हुई और फिर राजा और प्रजा में संघर्ष हुआ जिसमें प्रजा की विजय हुई और अंत में लोकतंत्र का निर्माण हुआ जिसकें मूल में समानता की भावना थी। मानव होने के नाते सभी व्यक्ति समान है और किसी व्यक्ति के प्रति उसके लिंग, धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा के आधार पर उसके साथ भेदभाव न किया जाये। यह था समानता का सिद्धांत। पूँजीपति अर्थव्यवस्था ने जब संसाधनों पर कुछ लोगो का आधिपत्य स्थापित कर दिया और समाज में असामनता की पराकाष्टा दिखाई देने लगी, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में। तब साम्यवादी विचारधारा ने विश्व में समानता स्थापित करने की घोषणा की। और पूँजीपति अर्थव्यवस्था को नष्ट करने की तैयारी बना ली। सम्पूर्ण समानता असाधारण कार्य है क्योंकि असमानता प्राकृतिक है। सम्पूर्ण विश्व में जो विविधता नजर आती है वो असमानता का प्रमाण है। प्रत्येक व्यक्ति अगर एक ही काम करे और एक जैसे ही करे, तो व्यक्ति का और समाज का विकास अवरुद्ध हो जायेगा। मानव एक रचनात्मक प्राणी है वह एक मशीन नही है इसलिये यह विविधता अनिवार्य है और शाश्वत है। साम्यवाद का उद्देश्य था कि संसाधनों पर सभी लोगो का समान अधिकार है। उन्हे सिर्फ कुछ लोगो के हाथों में रखना अन्य लोगो के साथ अन्याय है। इसलिये वह सरकारी स्वामित्व का पक्ष रखते है और समान वितरण का कार्य राज्य को सौंपते है। किंतु उनकी इस विचारधारा में पूँजीपति वर्ग का नुकसान होगा और इसलिये वह इस विचारधारा को विश्व में रोकने के लिये प्रयासरत रहते है।

स्वतंत्रता बनाम समानता– प्रथम विश्वयुद्ध के समाप्ति के समय से पूर्व ही 1917 में रूस में बोल्शेविक क्रांति होती है जिसे साम्यवादी क्रांति भी कहा जाता है। और रूस सोवियत संघ के रूप में एक साम्यवादी शक्तिशाली देश बनकर उभरता है। उधर अमेरिका एक पूँजीवादी शक्तिशाली देश बनकर

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

उभरता है। द्वितीय विश्व युद्ध के अनेक शक्तिशाली राष्ट्र शक्तिविहीन राष्ट्र में बदल जाते है और दुनिया दो ध्रुवों में बँट जाती है। संयुक्त राष्ट्र संघ का निर्माण होता विश्व शांति व सुरक्षा के लिये। किंतु उसके शक्तिशाली निकाय सुरक्षा परिषद में रूस व चीन साम्यवादी देश व अमेरिका, ब्रिटेन व फ्रांस पूँजीवादी देश शामिल थे और ये पाँचो देश सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य बने। इनको एक ऐसा हथियार दिया गया जिसने संयुक्त राष्ट्र संघ को शक्तिविहीन बना दिया और वो हथियार था वृ **वीटो**।

शीतयुद्ध के समय दोनों विचारधाराओं में वैचारिक युद्ध प्रारम्भ हो गया। एक दूसरे के साथ प्रत्यक्ष युद्ध न करके ये दूसरे देशों के माध्यम से अपनी शक्ति प्रदर्शन व अपनी विचारधारा का प्रसार करने का पूरा प्रयास करते थे। कोरिया का विभाजन व युद्ध, ईरान वृईराक का युद्ध, क्यूबा में सैनिक हस्तक्षेप, बर्लिन की दिवार, अफगानिस्तान में रूस का हस्तक्षेप। ऐसे कई अंतर्राष्ट्रीय घटनाएँ हुई जिनमें संयुक्त राष्ट्र संघ कुछ नही कर सका। क्योंकि वीटो का प्रयोग करके दोनो अपने को बचाने का सफल प्रयास कर लेते थे।

वर्तमान परिदृश्य :– वर्तमान में यदि रूस और यूक्रेन युद्ध को देखे तो ऐसा ही प्रतीत होता है जैसे रूस फिर से सोवियत संघ का निर्माण करके खुद को विश्व राजनीति में एक शक्तिशाली देश बनाना चाहता है। अमेरिका की बढ़ती शक्ति को रोकना चाहता है। किंतु वर्तमान में दुनिया बहुध्रुवीय हो चुकी है। आज के समय में भारत और चीन जैसे नवीन शक्तिशाली देश उभरते हुये नजर आ रहे है। पारस्परिक निर्भरता व परमाणुसम्पन्नता विश्व में शांति व्यवस्था बनाये रखने का काम कर रही है। स्वतंत्रता व समानता का संघर्ष आज भी बना हुआ है। सिर्फ विश्व व्यवस्था में नही बल्कि हमारे समाज में भी। आज भी अल्पसंख्यकों के साथ असामनता का व्यवहार किया जाता है और उनके अधिकारों उन्हे वंचित किया जाता है। अनुसूचितजनजातीय वर्ग आज भी मूलभूत आवश्यकताओं के लिये परेशान है। न उसे स्वतंत्रता मिल पा रही है और न ही समानता।

निष्कर्ष :– पूँजीवादी देश को देखे तो वहाँ स्वतन्त्रता तो है किंतु समानता नही है और यदि साम्यवादी देशों की तरफ नजर डाले तो वहाँ समानता लाने का प्रयास तो दिखता है किंतु व्यक्ति की कोई स्वतंत्रता नही है सिर्फ व्यक्ति की ही नही बल्कि संस्थाओं की स्वतंत्रता भी नही है। यह देखकर ऐसा लगता है कि क्या स्वतंत्रता और समानता एक दूसरे के विरोधी है? क्या जहाँ स्वतंत्रता होगी वहाँ समानता निवास नही करेगी ? क्या इन दोनों का संघर्ष अनवरत जारी रहेगा?

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

कई बार हमें दो परस्पर विरोधी दिखने वाली चीजे एक ही सिक्के के दो पहलू होते है। जिनका साथ होना ही उन्हे सार्थक बनाता है बिल्कुल उसी तरह स्वतंत्रता व समानता एक दूसरे के विरोधी नही है बल्कि पूरक है। बिना स्वतंत्रता के आप समानता की कल्पना नही कर सकते और बिना समानता के आप स्वतंत्रता की कल्पना नही कर सकते। भारत जो ना पूरी तरह से पूँजीवादी देश है और न ही साम्यवादी। यह स्वतंत्रता और समानता दोनो को समान महत्व देता है और इसी वजह से आज विश्व में व्यवस्था में भारत एक ऐसा देश बनकर उभर रहा है जो सबकी मदद करने के लिये तैयार रहता है। और किसी भी समस्या का निराकरण करने के लिये विश्व का नेतृत्व करने को सदैव तत्पर रहता है। इसका सबसे नवीनतम उदाहरण कोविड महामारी है। जिसके दौरान भारत नें विश्व को इस महामारी से बचाने में अपनी महती भूमिका अदा की है और यह हमें सिखाता है कि कैसे हम शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के साथ विश्व कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकते है। और इस मार्ग पर चलते हुये ना सिर्फ अपने देश का वरन सम्पूर्ण विश्व का कल्याण कर सकते है।

संदर्भ सूची :–

1- J S Mill, 1859/1962, 'On liberty'

2- W Kymlicka, 1989, Liberalism, community and culture, Oxford: Clarendon Press

3- S. Hook, *Political Power and Personal Freedom* (1959, repr. 1962);

4- Locke, J. ([1689] 1960) Two Treatises of Government(ed. P. Laslett).Cambridge: Cambridge University Press.

5- Marx, K. ([1844] 1978)Economic and Philosophic Manuscripts,inMarx–Engels Reader(ed. R. Tucker). New York: Norton

6- Marx, K. ([1848] 1978)The Communist Manifesto,inMarx–EngelsReader(ed. R. Tucker). New York: Norton (English edition published1888).

Oakeshott, M. ([1949] 1991) "The Political Economy of Freedom," in T.Fullerण किया जाय।